मै मंदिर मे बैठा था

मै मंदिर मे बैठा था
वो मस्जिद में बैठी थी.
मै पंडित जी का बेटा था
वो काजी साहब की बेटी थी.
मै बुलेट पर चल कर आता था.
वो बुरखे मे गुजरती थी.
मै कायल था उसकी आंखों का.
वो मेरी नजर पर मरती थी.
मै खड़ा रहता था चौराहे पर
वो भी छत पर चढ़ती थी.
मै पूजा कर आता था मजारो की
वो मंदिर में नमाज पढ़ती थी.
वो होली पे मुझे रंग लगाती
मै ईद का जश्न मनाता था.
वो वैश्णो देवी जाती थी
मै हाजी अली हो आता था.
वो मुझको कुरान सुनाती
मै उसको वेद समझाता था.
वो हनुमान चालीसा पढ़ती थी
मै सबको अज़ान सुनाता था ।
उसे माँगता था मैं मेरे रब से
वो अल्लाह से मेरी दुआ करती थी.
ये सब उन दिनो की बात है,
जब वो मेरी हुआ करती थी?
फिर इस मजहबी इश्क का ऐसा अंजाम हुआ.
वो मुसलमानों में हो गई।
मै हिन्दुओ में बदनाम हुआ.
मै मंदिर मे रोता था ।
वो मस्जिद में रोती थी.
मै पंडित जी का बेटा था.
वो काजी साहब की बेटी थी..
रोते - रोते हम लोगों की तब शाम ढला करती थी..
अपने अब्बू से छुप कर वो मस्जिद के पीछे मिला करती थी।
मैं पिघल जाता था बर्फ सा वो जब भी छुआ करती थी।
ये सब उन दिनो की बात है जब वो मेरी हुआ करती थी..
कुछ मजहबी कीड़े आ कर
हमारी दुनिया उजाड़ गए.
जो खुदा से न हारे थे.
वो खुदा के बंदो से हार गए..
जीतने की कोई गुंजाइश न था
मै इश्क की हारा बाजी था..
जो उसका निकाह कराने आया था
वो उसी का बाप काजी था.
जो गूंज रही थी मेरे कानो में
वो उसकी शादी की शहनाई थी..
मै कलियां बिछा रहा था राहो में
आज मेरी जान की विदाई थी.
मै वही मंदिर में बैठा था.
पर आज वो डोली में बैठी थी..
मै पंडित जी का बेटा था..
वो काजी साहब की बेटी थी...

- साइबर नजर

विविध/ इतिहास के अंधकार में

मदन केशरी

ईसा पूर्व 332 में, छः महीने की लंबी घेराबंदी के बाद, जब सिकंदर ने फारसी साम्राज्य के प्राचीन नगर टायर पर विजय कर लिया, तो सिंहद्वार से प्रवेश करते ही उसने आदेश दिया कि हर पुरुष, स्त्री और बच्चे को मार डाला जाए। सड़क, बाजार, घरों में, जो जहाँ मिला उसे खींच कर उसके सनिकों ने काट डाला। कुछ घंटों के भीतर हजारों लोग मारे गए, जो स्त्रियाँ और बच्चे बचे उन्हें दास-बाजार में बेच दिया गया। जो लड़ने के लिए सक्षम थे, वैसे 2,000 पुरुषों को टायर नगर के समुद्र तट पर ले जाकर, उनके शरीर में कीलें ठोंक सूली पर टाँग दिया गया।

गाजा में भी सिकंदर ने उसी नृशंसता से वहाँ के नागरिकों को नष्ट किया। उनका अपराध था कि उन्होंने बिना युद्ध समर्पण नहीं किया और एक लंबे समय तक लड़ते रहे। उस नगर का रक्षक और स्थानीय सेनाध्यक्ष बातीस नामक एक स्वाभिमानी योद्धा था। सिकंदर के समक्ष बंदी के रूप में बातीस को प्रस्तुत किया गया। स्वर्ण-सिंहासन पर बैठे हुए विजय-मद में चूर मैसिडोनियाई विजेता ने बातीस को उसके समक्ष सिर नीचे झुकाने के लिए कहा, मगर वह स्वाभिमानी योद्धा बिना उत्तर दिए उसकी आँखों में आंखें डाले देखता रहा। क्रुद्ध सिकंदर ने उसकी दोनों पिंडलियों में छेद करवा आर-पार रस्सी डलवाया और अपने रथ के पीछे बाँध गाजा नगर की चारदीवारी के गिर्द रथ दौड़ाने लगा। बातीस के छिन्न-भिन्न शरीर को मृत्यु के बहुत देर बाद तक सिकंदर रथ के पीछे घसीटता रहा।

ईरान के नगर पर्सेपोलिस के आत्मसमर्पण करने के बाद भी, वहाँ रक्तपात, बलात्कार और ध्वंश का क्रम आरंभ हुआ। सिकंदर के सैनिकों ने घरों में घुस-घुस कर पुरुषों को काटा, औरतों और लड़कियों के साथ बलात्कार किया। यातना से बचाने के लिए, तत्काल मृत्यु हेतु पुरुषों ने अपनी औरतों-बच्चों को छज्जों से नीचे फेंक दिया। सिकंदर ने पूरे नगर में आग लगवाया। केवल एक दिन के अंदर पर्सेपोलिस का भव्य नगर मृतकों से पटा, आग की लपटों में लिपटा था।

मगर इतिहास सिकंदर की महानता का आख्यान रचता है।

जब 1897 में विंस्टन चर्चिल अफगानिस्तान में सैनिक के तौर पर तैनात थे और उनकी टुकड़ी उत्तर-पश्चिम सीमांत पख्तून जनजातियों के आंदोलन को कुचलने के लिए लड़ रही थी, उस समय 23-वर्षीय चर्चिल के मानस मे पैठा रंगभेद ही नहीं बल्कि युद्ध और नरसंहार के प्रति उनकी लिप्सा भी उभर कर सामने आई। पख्तूनों से निपटने के विषय में उनके शब्द थे, "प्रतिरोध करनेवाले सभी को बिना किसी झिझक मार डाला जाएगा!"

अपने अफगानिस्तान-अभियान के संस्मरण में वे लिखते हैं, "हम सुनियोजित ढंग से आगे बढ़े, गाँव-गाँव, और लोगों सजा देने ले लिए हमने उनके घरों को नष्ट कर दिया, कुओं को भर दिया, टावरों को उड़ा दिया, बड़े छायादार पेड़ों को काट दिया, फसलों को जला दिया और जलाशयों को तोड़ दिया। ... पकड़े गए प्रत्येक पख्तून को भाले से छेद दिया गया या एक ही बार में काट दिया गया।"

ब्रिटेन के बहुत कम लोग बंगाल में हुए नरसंहार के विषय में जानते हैं, विंस्टन चर्चिल ने इस भयावह मानवीय त्रासदी को कैसे अंजाम दिया, इसकी तो बात ही छोड़ दीजिए। सन 1943 के बंगाल के %अकाल% के दौरान भारतीयों के प्रति चर्चिल की नस्लीय घृणा के कारण चालीस लाख लोग भूख से मर गए। "मुझे भारतीयों से नफरत है। पशुओं के धर्म वाले वे पशु जैसे लोग हैं", यह चर्चिल की रुग्ण नस्लीय मानसिकता की अभिव्यक्ति थी। चर्चिल को ब्रिटेन में देवता के रूप में पूजा जाता है।

नाइजीरियाई लेखक, चिनुआ अचेबे लिखते हैं, "जब तक हिरणों के अपने इतिहासकार नहीं होंगे, तब तक शिकारी शिकार के इतिहास का हमेशा महिमा-मंडन करता रहेगा।" सम्पूर्ण मानवीय इतिहास विजय का गुणगान है। वह न केवल विजेता का महिमा-मंडन करता है बल्कि उसके किये हुए रक्तपात को उत्सव में परिवर्तित कर देता है। वह दमन और नरसंहार की सारी व्याख्या बदल देता है। जब तक पराजित और वंचित स्वयं अपनी कथा नहीं लिखते, वे इतिहास से विस्थापित किए जाते रहेंगे, उन्हें मानवता के लिए एक अभिशाप के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहेगा। और हर वर्ष उनके वध का उत्सव मनाया जाता रहेगा।

जैसे होली पर होलिका के वध का उत्सव।

कविता/ साहेब और सवाल

रंजू राही

**ऑटो रिक्शा में जो लाश पड़ी है
किसकी है?
मेरे पिता की है साहब!**

**ऐसे सड़क पर
ये कौन महिला बच्चा जन रही है?
मेरी पत्नी है साहब!**

**सड़कों पर खून सने तलवों के
निशान किसके हैं?
मेरी बूढ़ी माँ के हैं साहब!**

**अरे रे, ये नाबालिग कौन है
जो बैल के बदले जुत गया है?
मेरा इकलौता बेटा है साहब!**

**यह जो प्यासा मर गया है वो
कौन है?
मेरा संघाती है साहब!**

**तुम कहाँ भागे जा रहे हो?
खाना लाने साहब!**

**तुम कौन हो भाई?
ना हिन्दू ना मुसलमान
ना सिक्ख ना ईसाई
अपने ही देश में
प्रवासी मजदूर हैं
बहुत मजबूर हैं साहब!**

**और ये थकान से चूर
कौन है जो भटक-भटक
चल रही है साथ में?
ये मेरी मुनिया है साहब!**

**बस यही हमारी कहानी है
बदरंग दुनिया बीच साहब!**